राधास्वामी

मासिक समाचार पत्रिका

संत संदेश

वर्ष : 9 अंक : 106 15 फरवरी 2006

सदस्यता शुल्क : ——— वार्षिक : रुपए 40/-
भारत व नेपाल में एक प्रति: रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	सेवादारों के लिए विशेष सूचना	43
3.	ध्यानाकर्षण बिन्दू	44
4.	सत्संग (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	45
5.	अनमोल वचन व ज्ञान सार	46
6.	सतगुरु कृपा	47

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)
वेबसाइट:- www.radhaswamidinod.org
इ-मेल:- info@radhaswamidinod.org

भिवानी	:	कैसेट क्रमांक : 117
दिनांक	:	8 अगस्त, 1993
समय	:	रात्रि

हां भाई हंसा ! चाल बसो उस देश,
जहां का बसा फेर ना मरे।। टेक।।
जहां अगम-निगम दोउ धाम, बास तेरा परे से परे।
जहां वेदों की गम नांय, ज्ञान और ध्यान भी उरे।।
जहां बिन धरणी की बाट, चरणों ते बिना गमन करे।
जहां बिन श्रवण सुन लेय नैनों के बिना दर्श करे।।
जहां बिन देही एक देव, प्रोणों के बिना स्वांस भरे।
जहां जगमग-2 होय, उजियारा दिन रात रहे।।
जहां प्रेम-नगरिया के घाट, अधर दरिया बहे।
वहां सन्त करें अस्नान, दूजा तो कोई न्हाय ना सके।।
जाके न्हाय से सुख होय, तपत तेरे मन की मिटे।
तेरे जन्म मरण मिट जांय, चौरासी का फन्द कटे।।
यों कहते हैं नाथ गुलाब, अमरापुर थारा बास करे।
गुण गावे, 'भानीनाथ', भजन में सदा लगा ही रहे।।

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों ! जिनकी यह वाणी है मैंने वे महात्मा देखे तो नहीं है। मैं साधुओं महात्माओं के सत्संग में कहने पर ही बताता हूं कि वे दो साधु ग हस्थी योगी थे। बड़े अच्छे महात्मा हुए हैं। उनके शब्दों को सुनते हैं। बहुत अच्छे शब्द

हैं। वे भानीनाथ और गुलाबनाथ थे। उनकी वाणी सबसे ही मिलती जुलती है। साधु कोई हो सभी उस घर के होते हैं।

साधु साहेब एक हैं, दो समझे सो ऊत।
ताने पेटे देख ले वही सूत का सूत।।

सूत को किसी तरफ से देख लो ताने में हो या पेटे में सूत ही होता है।

हरिजन हर के लाडले, हरिजन हर के पूत।
हरीजन न होते जगत में, साहेब जांदा ऊत।।

ये महात्मा, साधु जितने भी आते हैं सब के सब उस मालिक को याद करने के लिए आते हैं। वे मालिक को ऐसा याद करते हैं कि उसको जगा देते हैं। इन्होंने तो बड़ी लंबी चौड़ी बातें कहीं हैं। मेरे तो समझ में भी नहीं आई। जितनी मेरी दौड़ है वहां तक की बातें मैं बताऊंगा।

हां भाई हंसा चाल बसो उस देश जहां का वासी फेर ना मरे।

अब यह तो आपने फैसला कर लिया कि इस जगह पर दो हो गए हैं। एक कहने वाला और एक सुनने वाला और यही अभ्यास में जब साधन करके पहुंचते हो तब पता लगता है कि एक देखने वाला भी है और सुनने वाला अलग है। अब ये दो हो गए तो और भी कोई इससे अलग हो गया होगा। इस सारी रचना का करने वाला संसार में एक है। इसी तरह से इस शरीर में भी रचना है। इस रचना का करने वाला भी एक ही है। बाहर सारी रचना का करने वाला कुल मालिक राधास्वामी दयाल है। वह शब्द है। इस शरीर के अंदर भी शब्द की ही अंश है एक। यह उस सूर्य की किरण है। सारे काम को वही चला रही है, देख रही है और कर रही है। उसी की वह अंश बोलती भी है कि भाई हंसा चाल बसो उस देश। वह देश कौन सा है? और कौन कहता है? मैं अपने विचारों से बताता हूं। आप लोग भी यही विचार लगाओगे और

दूसरा कोई विचार है तो मुझे भी बता देना कभी मैं पागल हुआ फिरता हूं। मैं तो महाराज जी की दया से व संतों की दया से यही समझा हूं कि कहने वाली ये हमारी बुद्धि है। जिस इंसान में बुद्धि नहीं होती वह कुछ भी नहीं कर सकता है। भक्ति भी नहीं कर सकता है। पर आप बीच में ही प्रश्न कर सकते हो कि आप यह भी कह रहे थे एक दिन कि वहां बुद्धि की गम नहीं है। हां उस जगह पर तो उसकी गम नहीं है। पर पहले तो बुद्धि से ही काम लेना पड़ेगा। उस जगह पर महाराज तुलसीदास ने भी कह दिया–

गो-गोचर जहं लग मन जाई। इतने माया समझो भाई।।

यही स्वामी जी की वाणी है–

ये करणी का भेद है, नहीं बुद्धि विचार।
बुद्धि छोड़ करणी करे, तब पावे कुछ सार।।

अब यहां आकर बुद्धि फेल हो जाती है। नहीं। बुद्धि फेल तो कतई नहीं होती है। इस जगह पर स्वामी जी ने यही कहा है कि अगर तुम बुद्धि के विचारों में पड़े रहे तो बुद्धि से ही यही सोचो कि यह बात सत्य है और यह असत्य है। तो यह सोच लो कि भक्ति मार्ग ही सत्य है और सब चीजें असत्य हैं और कुछ सोचने की जरूरत ही नहीं है। बस। सत्य को पकड़ कर आगे चलो। जब हम सत्य को पकड़ कर आगे चल पड़े तो सारा ही फैसला बन गया। और चीजें नीचे रह जाती हैं। सारी नीचे भी रह जाती हैं और सारी उसमें आ भी जाती हैं। नहीं यह बात नहीं हैं। मैं अपने विचार, अपनी बुद्धि और अपने ही तजुर्बे से कहता हूं।

एक बार की बात है। मैं होशियारपुर गया हुआ था। मौन का टाइम था। लोगों ने कहा–महाराज जी कहां चले गए? वे ढूंढते फिरे। मैं वहां महीने भर रहा था। खाना भी कुछ नहीं था। ऐसा ही नेम बना हुआ था। मैं अपनी बीती हुई बातें बताता हूं। मैंने उन महंतों का, संतों का संग किया इसीलिये हेराफेरी की बात भी नहीं

कहता। हेराफेरी की बातें तो वही कहता है, जिसने संसार को खाना है। संसार को धोखा देना है। संसार को धोखा तो कोई भी नहीं दे सकता है। ये धोखा देने वाले महात्मा, साधु, जोगी जितने भी हैं, वे संत महात्मा नहीं हैं। वे फंडी और पाखण्डी हैं। धोखा देने वाला दुनिया को धोखा नहीं देता है। वह तो अपनी ही आत्मा को धोखा देने वाला होता है। हम जानते हैं कि हमने दुनिया को धोखा दे दिया। नहीं, अपनी आत्मा को धोखा पहले दिया जाता है।

सो ही मैं बताता हूं। मैं लेटा हुआ था। दो चार घंटे से लगातार लेटा हुआ था तो पता लगा कि हां जीवात्मा भिन्न है और यह जो ढांचा है, ये और जो चीजें हैं ये भिन्न हैं। मैं अगर लिखना जानता तो पता नहीं क्या लिखता। इन बातों का निर्णय कर देता। उस वक्त मेरे अंदर से एक तारा सा निकला। मैं अपने तजुर्बे की बातें बताता हूं। वही बातें कहता हूं जो मैंने देखा। आप लोगों के आगे झूठ नहीं बोलूंगा। तारा निकला और मैंने सोचा कि तू तो मर गया है। जीव तो निकल गया है। अब ये बात किसने कही कि जीव निकल गया? अब वह तारा निकल गया और आसमान में घूमना शुरू हो गया। मैं उसी जगह पर हूं। यही सोचता था कि जीव तो गया और ये मिट्टी पड़ी रह गई है। हमारे ऋषि–मुनियों और ब्राह्मणों का तजुर्बा गलत नहीं था। जो आदमी चोला छोड़ जाते थे उनके लिए पिंड भरवाते थे और दूसरी क्रियाएं करवाते थे, वे ठीक करवाते थे। वे यह भी कहा करते थे कि वह जीव चक्कर काटता रहता है। तो इस तरह से वह शरीर भी जिन्दा है और वह निकल भी गया है। काफी देर हो गई ऐसा सोचते–सोचते। फिर कुछ देर बाद वही भंवरा सा आकर अंदर समा गया। न शरीर बिगड़ा, न और कोई बात हुई।

सो काफी बातें याद आती हैं। पर कहा नहीं जा सकता है। मैंने सोचा कि इस शरीर का कर्ता अलग है। इसमें जो चीजें

देखती और कहती हैं वे अलहदा हैं। वे किससे बनी हैं? ये उसी से बनी है। आप प्रश्न कर सकते हो कि जब वह निकल गया तो वह रही कैसे? यह भी एक बात है। आपने देखा होगा कि अगर छिपकली की पूंछ कट जाती है तो वह उछलती फिरती है। किसी का भी अंग अगर कट जाए तो वह कूदता ही फिरता है। वह क्यों कूदता है? वह उस जीव से जुदा तो हो गया है। फिर यह कूदता क्यों है? यही एक बात है। यह भी कोई चीज ही है। इसी तरह स्वप्न में हम इस शरीर से बाहर निकल जाते हैं और हम बड़े–बड़े दुख भी देखते हैं और राजा महाराजा भी बन जाते हैं। सारे ही काम करते हैं। कई–कईयों का जीव निकल जाता है स्वप्न में ही। बड़े दुखी होते हैं। कोई विषय–विकारों में पड़ जाता है। कोई हाथ मारता है, मुक्का मारता है तो वह दीवार से लग जाता है। इस बात को ही मैंने समझ कर कहा कि कोई और चीज है। सबसे पहले क्या बनती है? सबसे पहले तो वह जीवात्मा ही इस शरीर में आती है। उससे ही तीन चीजें बनती हैं। रजोगुण, तमोगुण व सतोगुण। ये तीन गुणों की गारा है।

छत्तीसों की छांत लगाई, चिन गया चिनने हारा।

छत्तीस पता नहीं कौन सी हैं? मैं तो यही बताता हूं कि पांच तत्व हैं। पच्चीस प्रक ति हैं। चार अन्तःकरण होंगे और भी कोई न कोई लगाता है। तो इसमें बहुत जंजाल है। ये सभी शरीर के साथ पीछे ही बनते हैं। आप में समझदार भी होंगे। जब अभ्यास करते हो, तो मैंने आपको बताया कि देखने वाली तो और ही चीज है। तो क्या कभी यह सोचा कि जो देखती है वह कौन है? इस तरह से अभ्यास करते–करते देखने वाले का ख्याल आ जाएगा। देखने वाली चीज कौन है और सुनने वाली कौन है? तो आप पूछोगे क्या वे दो हैं? हां ये दो हैं।

शब्द बिना सुरत आंधरी, कहो कहां को जाय।
द्वार न पावे शब्द का, फिर-फिर भटका खाय।।

सुरत शब्द के बिना अंधी होती है। वह शब्द को पकड़ कर ही चलती है। अब सुरत तो सुनने वाली है। अब देखने वाली कौन होगी? वह निरत होगी। निरत देखती है। वह भी अंतर में काफी दूर तक चलती है। निरत जब चली जाती है तो आगे फिर सतगुरु आ जाता है। वह दया करता है। इसी तरह से अंग तो एक है पर ये दो हैं। न्यारा–न्यारा काम करती हैं। इधर भी बिजली है और उधर भी बिजली है। तो दोनों तरफ छाया दिखाई देने लग जाती है। दोनों काम करती है। इसी तरह कहने वाला कौन है? सो यह बुद्धि कहती है, भाई हंसा चाल बसो उस देश। बुद्धि कहां से आई है? बुद्धि हंसा में से ही निकल करके आई है। उसमें से निकल कर उसी को उपदेश देती है। यह मैं बोलता हूं, बताता हूं। आप लोग सुनते हो। किसी के दिमाग में यह भी आई होगी कि आप क्या कह रहे हो? यही तो एक बात है। आप कहोगे जीव और ये सांस न्यारे–न्यारे है? हां ये तो न्यारे हो ही गए। इसमें दस वायु हैं। ये न्यारी हुई कि नहीं? पांच तत्व हैं। ये न्यारे हुए कि नहीं? पहले एक होता है। उस एक में से अनेक बन जाते हैं। वह एक किस तरह है? जैसे हमारी सुरत राधास्वामी धाम से चलती है और जब वह नीचे उतरती है पहले तो वहां एक ही तत्व था। वह कौन सा तत्व था? वह शब्द था। उस शब्द तत्व से ही आकाश तत्व बन गया। आकाश से वायु तत्व बन गया। वायु से अग्नि तत्व बना और अग्नि से जल तत्व बना और जल से प थ्वी तत्व बना। वही इन्सान जब अभ्यास करके चलता है वे सभी तत्व अपने–अपने में समा जाते हैं। महाप्रलय नहीं होती है। महाप्रलय तो तब होती है जब आखरी शब्द में समा जाता है। इसीलिए तो शब्द ही धरती और शब्द ही आकाश कहा है। जब साधन करने वाले की प्रलय होनी शुरू होती

है तो प थ्वी तत्व जल में समा जाता है। अब प थ्वी की प्रलय हो गई। जल प्रलय तो नहीं हुई। जल प्रलय जब होती है तो वह अग्नि में समा जाता है। आप कहोगे–क्या जल अग्नि से निकला है? हां, जल अग्नि से ही निकला है। अग्नि ही इसको सोख लेती है। अग्नि तत्व वायु में समा जाता है। इस अग्नि तत्व में भी जीव रह जाते हैं। आप कहोगे–क्या अग्नि में जीव है? मैं तो हमारे महात्माओं का कहा ही बताता हूं। कई लोग यह भी कहते हैं जीव अंगारों को भी खाते हैं। जैसे चकोर है। अग्नि तत्व सिमट कर वायु तत्व में समा जाता है। किसी ने एक बार कहा था कि अग्नि का संहार करने वाला कौन है? अग्नि का संहार करने वाला वायु तत्व है। वायु अग्नि को खा जाती है। वायु आकाश में और आकाश शब्द में समा जाता है। शब्द में समाने पर एक ही तत्व शब्द रह जाता है। हम उसी धाम से आए थे। राधास्वामी धाम से। हम उस में समा गए। महात्माओं ने बुरी बात तो नहीं कही। संतों ने तो यही कहा है–

शब्द ही धरती शब्द ही आकाश,
शब्द ही शब्द भया प्रकाश।।
सगली स ष्टि शब्द के पाछे।
नानक शब्द घटे घट आछे।।

और भी कई संतों ने यही कहा है। पलटू जी भी कहते हैं–

शब्द विवेकी हंसा, बैठ शब्द की डार।
शब्द ही ओढन, शब्द ही पहरन।
शब्द ही शब्द आहार।
निश दिन रहो शब्द के घर में।
शब्द ही गुरु हमार।।

हमारा गुरु ही वह शब्द है। शाम को भी शब्द के विषय पर ही मैं बातें कर रहा था। उसे तुम कुछ भी कहो यह तुम्हारी मर्जी

है। यही स्वामी जी महाराज कहते हैं–

शब्द ने रची त्रिलोकी सारी।
शब्द से माया फैली भारी।।
शब्द ने सात दीप नौ खण्ड किये री।
शब्द से चांद और सूरज भये री।।

जितना भी पसारा है यह शब्द का है। शब्द से बाहर कुछ भी नहीं है। बोलने वाले को बुद्धि कहती है। किस से? जीव से कहती है। जीव को ही कई जीवात्मा कहते हैं। सुरत, रूह और चेतन शक्ति इसे ही कहते हैं। प्रताप ने भी एक दोहा कहा था। वह कबीर का दोहा था–

कबीर ये मन काग था करता जीवन घात।
अब ये हंसा भया, चुग-चुग मोती खात।।

वही जीवात्मा, मैं कह रहा हूं। वह जीवात्मा जब राधास्वामी धाम से चलकर आई उस का नाम अनामी था। उसी का नाम अगम रखा गया। फिर अलख रखा गया। वह सुरत नीचे उतरती गई। उसी का नाम सतनाम रखा गया। सतपुरुष के दर्शन हो गए। उससे नीचे जब धार उतरी तो यहां माया की मिलौनी हो जाती है। उस वक्त माया की मिलौनी होने से दो धारें बन जाती हैं। सतलोक से नीचे के स्थान को जहां वह उतरी उसको भंवर गुफा कहते हैं। उस स्थान पर दो धारें बन जाती हैं। वहां काल का डेरा है। वहां सोहं की धुनि होती रहती है। इसीलिये महाकाल का डेरा है। सोहम् का जाप करने वाले कह देते हैं कि हमारा खण्डन करते हो। सो यह मत कहना। मैंने तो किसी का भी खण्डन नहीं किया है। मैं उनकी चौंध खोलता हूं। उनको अभ्यासी गुरु मिलता तो पता दे देता कि सोहं का देश है वहां सोहं की धुनि होती है। सोहं की धुनि में पहुंच जाओगे तो वहां दो धारें मिल जाती हैं। एक नहीं रहती। वहां दो धारें एक ज्योति की और एक निरंजन की बन

जाती हैं। इसीलिये कहते हैं सोहं। सोहं का अर्थ है कि तू भी ब्रह्म है और मैं भी ब्रह्म हूं। वह तभी कहता है जब वह उस समुद्र को देखता है। जो सोहं की धुनि सुन लेता है वह परमहंस गति में चला जाता है। फिर भी कुछ न कुछ बन जाता है। पर शब्दों के जाप करने से तो हम ढीले पड़ जाते हैं। कोई झटका लग जाता है तो हम गिर भी जाते हैं। इसीलिए नीचे आकर ये दो धारें बन जाती हैं और उन दो धारों से फिर तीन धारें बन जाती हैं। फिर तीन से अनेक बनते चले जाते हैं। उन तीनों धाराओं की ड्यूटी बन गई। ब्रह्मा, विष्णु, महेश। इन तीनों की तीन धाराएं आई। ब्रह्माकुमारी मत वाले इस बात को बड़ा खोल करके बताते हैं। मैंने भी आपको इसी तरह समझाया है क्योंकि मैं तो सभी मतों में घूमा हुआ हूं। मैंने आज तक किसी मजहब का खण्डन नहीं किया है। न ही करता हूं। खण्डन तो नालायक करते हैं। गिरे हुए आदमी खण्डन करते हैं। जो पूरा है वह भेद बता देता है कि इस की वह हद है और इसकी यह हद है। यह कोई बुरी बात नहीं है। वे खुल्लम खुल्ला बड़ी अच्छी तरह बताते हैं कि उस काल महाराज के, ज्योति निरंजन के तीन लड़के ब्रह्मा, विष्णु और महेश। उनकी ताकत ने फिर क्या काम किया? एक की ड्यूटी रचना करने की हुई, दूसरे की पालन करने की और तीसरे की संहार करने की हो गई। तीनों को ड्यूटी मिल गई। अब आगे आप जानते हो कि उनकी महिमा कितनी बड़ी है। वे स्वर्ग भी देते हैं और वैकुण्ठ भी देते हैं। उनका खण्डन करना बुरा है। पर वे मोक्ष नहीं दे सकते हैं। मोक्ष का तो जब खुद वहां जाता है तभी पता लगता है। यह बात तो बुद्धि कहती है और इस जीव को कहती है। जब यह पलट जाता है तो हंस बन जाता है। जब यह धारा वहां से चली नीचे उतरती गई और जीव रूप में आ गई। जैसे पहले भी मिशाल दी थी। जैसे गंगोत्री–यमनोत्री की पहले धारें चलती हैं। वही धार

वहां से उतर कर बद्रीनारायण में आती है उसमें कुछ फर्क पड़ जाता है। वही पानी है और वही धारा है। फिर जब ऋषिकेश में, हरिद्वार में आई तो फिर फर्क पड़ गया। इसी तरह से कनखल और नीचे के स्थान पर आती गई और फिर उसका खेतों में पानी लगता है। जल तो वही है पर उसमें फर्क पड़ता चला जाता है। उसी पानी में बदबू भी आनी शुरू हो जाती है। जो हम हर की पौड़ी से पानी लाते हैं उसमें बदबू नहीं आती है। उसमें बहुत से गंदे नाले भी पड़ते हैं। वह जल सड़ता नहीं है। क्योंकि उसमें शक्ति है। कई लोग कह देते हैं कि वहां तो बूटियों का पानी होता है। वह भी तो कोई शक्ति होगी? उनका खण्डन करना बहुत बुरी चीज है। पर यह कहते हो कि मुक्ति अलहदा रह जाती है। सो अब नीचे आकर वह जल पानी बन गया जो हमारी मुक्ति करवाने वाला और स्वर्ग वैकुण्ठ दिलाने वाला जल था। जो पापनाशनी गंगा थीं उन्हीं का जल खेतों में आते–आते पानी बन जाता है। इसी प्रकार से हमारी सुरत भी नीचे उतर करके कर्मों में फंस कर जीव कहलाना शुरू कर देती है। जब पूर्ण महात्मा, सतगुरु मिल जाता है, उसका पूरा भेद देकर आगे ले जाता है तो वही जीव हंस गति में आ जाता है। हंस गति में तभी आता है जब वह अंतर की धुनि को सुन लेता है। बाहर का जाप तो बंद कर दिया। अंतर की जब धुनि सुनी तो सुनते ही हंस गति बन गई और वह मोतियों का आहार करने लग गई। नाम रूपी मोती है, उसका आहार करने से हंस गति बन गई। आगे जाकर और भी बदल जाता है और अपने घर चला जाता है। हंस की यह महिमा है, एक मन पानी में पाव भर दूध मिला हो वह अपनी चोंच उसमें डुबो कर दूध–दूध निकाल लेता है। इसी प्रकार से सत्संग में जो हंस गति के आदमी आते हैं वे और नुक्ताचीनी नहीं करते हैं वे गुण लेते हैं और गुण लेकर निहाल हो जाते हैं और मस्त रहते हैं। उन गुणों को

चबाते–२, जुगलाते–२ रस निकाल लेते हैं। रस निकाल कर अपना जीवन बना लेते हैं। इसलिए मैं हंस गति के आदमियों की बातें कहता हूं। वे ज्यादा झगड़ेबाजी नहीं करते। मैं छोटा था उस वक्त साधुओं से मिशाल सुना करता था। वे कहते थे–बेटा ! साधुओं की गति छाज जैसी होती है। छिलका–२ फेंक देता है और सार वस्तु को रख लेता है। छलनी आटा आटा निकल देती है और छिलके को रख लेती है। दुष्ट आदमी छलनी जैसी व त्ति के होते हैं। वे बढ़िया माल को निकाल देते हैं और बेकार को रख लेते हैं। सज्जन आदमी छाज जैसे होते हैं। बढ़िया माल को रख लेते हैं। घटिया चीज को फेंक देते हैं। सो यह जोड़ा बराबर चलता है। जैसे कि आस्तिक और नास्तिक का जोड़ा होता है। इसी तरह यह भी एक जोड़ा ही चलता है। इसी प्रकार फिर कहते हैं। चीचड़ जैसे थनों में रहता है। वह दूध नहीं पीता, वह खून पीता है? बच्छा दूध पीता है। खून नहीं पीता है। हमारे महात्मा लोगों की व त्ति बछड़े जैसी होनी चाहिए। हमें गुण ले लेना चाहिए और अवगुण छोड़ देना चाहिए। वे गुण को छोड़ देते हैं और अवगुण को ले लेते हैं। उन्हीं थनों में चीचड़ रहता है, वहीं से बछड़ा दूध पी लेता है। बछड़ा दूध खत्म होते ही थनों को छोड़ देता है। इसी तरह दो बुद्धियां होती हैं। एक दुष्ट बुद्धि और एक पवित्र। दुष्ट बुद्धि के आदमी सत्संग में आएंगे तो भी वे अवगुण ही लेंगे। वे चीचड़ की तरह अवगुणग्राही होते हैं। सज्जन आदमी चाहे कहीं भी चले जाओ वे वहां से गुण लेकर आते हैं। मैं अपने जीवन में एक बार सांग देखने चला गया। छोटी उम्र थी। उसकी बातें आज भी मुझे याद आती हैं। उन बातों ने मेरी जिन्दगी बनाई। मैंने देखा उसमें कोई साहूकार था। उसके घर में टोटा (कंगाली) आ गया। वह विदेश में जाने लगा। मुझे पता नहीं वह किस का सांग था, कैसा था। उसकी पत्नी भी रोने लगी और उसकी मां भी रोने

लगी। वह घबरा गया। उसकी मां ने एक रागनी गाई। उसका मुझे एक ही टप्पा याद है। उसी ने मेरा जीवन बना दिया, जब भी कोई आफत आई। जैसे मैं एक मिशाल दिया करता हूं। हमारे भाई रतीराम ने एक बात कही थी। मेरे साथ 8–10 दिनों तक बहुत ज्यादा झमेला रहा था। मैंने इनसे कहा कि भाई ये तो बहुत गंदा बोलते हैं। ये गालियां देते हैं। क्योंकि जिसका कोई भी वालीवारिश नहीं हो तो उसके साथ में यूं ही किया करते हैं। मेरा कोई वालीवारिश तो था नहीं। मेरा तो एक राधास्वामी दयाल ही वाली वारिश रहा है। उनकी दया से ही जिन्दा रहा हूं। मेरे पक्ष में बोलने वाला कोई भी नहीं था। यहीं भिवानी के आदमी थे और उन्होंने 10 दिन तक मेरे विरोध में जलसा किया। पर उनकी एक खास बात थी। उनका इश्तिहार मेरे पास है उसमें लिखा है कि लड़का बहुत पवित्र है। यह मेरे पास है। यह लड़का अच्छा है पर गलत जगह में फंस गया है। फिर दूसरे लोगों ने कहा कि जब लड़का अच्छा है तो हमें तो जगह की जरूरत नहीं है। हमें तो लड़के की ही जरूरत है। परिवार वालों ने इस तरह से कहा। उन्होंने मेरी बड़ाई की और चीजों की बुराई की। मैं दुख में था। रतीराम ने कहा–फिर क्या बात है? अगर हमारे अंदर ऐब होंगे तो छोड़ देंगे और ऐब नहीं हैं तो ये गंदा बोलते रहेंगे। हमारा क्या लेते हैं? बड़ी अच्छी बात है। ये बात अब भी याद आती है। यही बात मैं अब बताता हूं। मैं उस जगह पर गया तो उस बणिए के लड़के ने भी रोना–पीटना शुरू कर दिया। तो उसकी मां ने कहा–

के टोटे का रोना रे बेटा के नफे की बात।
ये तो चालें बेटा रे दोनों जिन्दगी की साथ।।

सोचो ! उस सांग से मैंने गुण लिया या अवगुण लिया? बड़ी–बड़ी आफतें आईं। भिखारी बनकर भी रहा। दुखी होकर भी रहा। पर यह बात याद आ जाती थी।

वह मां अपने बेटे को समझाती है। इंसान चाहे कहीं भी जाओ। गुण ले लेता है और उस गुण को वह याद रखता है। सो बिष्ठे की मक्खी मत बनो। मधुमक्खी बन कर दिखाओ। सत्संगियो! बिष्ठे की मक्खी तो न आप आनन्द लेती है और न औरों को लेने देती है। मधुमक्खी रस निकाल कर आप भी पीती है और दूसरों को भी अम त पिलाती है। सो अगर सत्संगी हो तो मधुमक्खी बनो। मैं आप लोगों को बातें कह रहा था कि चीचड़ तो थनों में रहता है। उसे खून पीने की आदत है। बछड़ा थनों से दूध पीकर एक तरफ हट जाता है। ये बुद्धियां बता दी हैं। सो यही फिर बताता हूं। जैसे एक छोटी सी जोहड़ी है। उसमें हजारों बकरियां पानी पी जाती हैं घुटने टेक कर। पर अगर कोई झोटा आ जाता है तो पहले तो वह लोटेगा। पानी का कीचड़ कर देगा। फिर वह पानी पीएगा। न वह आप पी सकता है और न औरों को पानी पीने देता है। इसी तरह से कई–कई दुष्ट नास्तिक बुद्धि के होते हैं। वे खुद तो गिरे हुए होते हैं पर औरों को भी शांति नहीं लेने देते हैं। वे उस झोटे की तरह कीचड़ कर देते हैं। न आप आनन्द लेते हैं और न दूसरों को आनन्द लेने देते हैं। पर सत्संगी की बुद्धि तो बकरी जैसी होनी चाहिए। अपने घुटने टेक कर पानी पीकर चली गई और सारा दिन कीकर की किकरोली खाती हैं। जब वह रात को जुगाली करती है तो उसके बीजों को बाहर डाल देती हैं। रस को रख लेती हैं।

इसी तरह तुम सत्संग में आते हो, सत्संग की बातें सुनते हो। उन बातों को दिमाग में बिठाओ। मेरा यही प्रसाद है। मैं और महात्माओं की तरह झूठा खिलाने का प्रसाद नहीं देता हूं। हमारा ऋषियों का प्रसाद ही यह था कि उनकी वाणी को अपने दिमाग में बिठाओ। फिर रस की जुगाली सहारो। घटिया बातों को निकाल दो। रस–रस को रख लो। मैंने हजारों सत्संग सुने।

हजारों महात्माओं के सम्प्रदायों में गया। मैंने तो वही बड़ा माना जो नशों से बचा हुआ था। वही बड़ा होता है जो नशे–विषयों से बच गया। वही महान है। महात्मा है चाहे किसी भी सम्प्रदाय का हो। चाहे वह देवी का पाठ करता हो। इनसे जो बच गया उसके सभी पवित्र काम आप ही आप बनते जाएंगे। क्योंकि हमारे विचार पवित्र हैं तो एक दिन हम अपने घर में पहुंच जाएंगे। एक जन्म में नहीं तो दूसरे जन्म में पहुंच जाएंगे। तीसरे में पहुंच जाएंगे। क ष्ण जी भी यही कहता है। एक, दो, तीन, चार जन्म में आप पहुंच जाओगे। मैंने कभी गीता सुनी थी। सो इसका छठा अध्याय है शायद। इसमें अर्जुन कहता है कि महाराज ! जो योगी योग अभ्यास करते हैं, मुझे इतनी बात याद है ज्यों की त्यों तो नहीं बता सकता हूं। ये बताने वाले पढ़े लिखे ही होते हैं। वह कहता है कि योगी लोग जो अभ्यास करते हैं उनका बीच में चोला छुट जाता है तो क्या उनका योग–अभ्यास नष्ट हो जाता है? जैसे हवा चलती है। बादल को तितर–बितर कर देती है। क्या इसी तरह उनकी क्रिया भी नष्ट हो जाती है? क ष्ण जी कहते हैं–नहीं ! वे जिस जगह पर चोला छोड़ते हैं, उसी (रूहानी) जगह अगले जन्म में आ जाते हैं। वे खानदानी घर में जन्म लेते हैं। विद्वान हो जाते हैं उन्हें वही क्रिया याद आती है और उसी जगह से फिर शुरू कर देते हैं। फिर वे अपना काम पूरा करते हैं। अगर फिर भी गड़बड़ हो जाती है तो उससे अगले जन्म में पूरा काम कर लेते हैं। इसी तरह से संतमत भी यही कहता है कि एक, दो, तीन, चार जन्मों में काम बन जाएगा, लगे रहो। पर संतों ने कहा है कि इसी जिन्दगी के चार भाग बनाओ। चार हिस्से वही–ब्रह्मचर्य, ग हस्थ, वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम। संतमत भी यही कहता है कि चार हिस्से बनाओ। आगे का कोई भी पता नहीं है। यह तो एक कतरा है और हवा का झोंका लग जाएगा तो पता नहीं कहां पहुंच

जाएगा। फिर मुश्किल हो जाएगी। इसी जिन्दगी में अपना काम करके दिखाओ। कौन सा काम करोगे? यही इस शब्द में कहा है–

हंसा चाल बसो उस देश, जहां का वासी फेर ना मरे।

अर्थात् मरने के बाद इस संसार में फिर ना आए। कई लोग इस बात पर बड़े रूढ़िवादी हो जाते हैं और कहते हैं कि फिर तो सारे ही वहां चले जाएंगे। ये देश तो उजड़ जाएगा और वह बस जाएगा। क्या फिर वहां भीड़ भड़ाका नहीं हो जाएगा? मैं कहता हूं–भले आदमियों ! तुम कर्ता मत बनो। तुम उस परमात्मा का दर्जा मत लो। वह फिक्र तो उस परमात्मा को है। अगर वहां भीड़ भड़ाका होगा तो वह फिक्र भी उसी को है। तुम अपने चलने की कोशिश तो करो। पर वे आलसी टट्टू होते हैं। वे चार मिनट भजन में तो बैठ नहीं सकते जिरह लड़ाते हैं। वे गुरू द्रोही होते हैं और नाम के भी द्रोही होते हैं। धर्म के भी द्रोही होते हैं। सारी दुनिया का धर्म क्या है? इसी बात को समझ लो जो मैं बता रहा हूं। वह जीवन निकल गया फिर क्या रहा? सो ही मैं बताता हूं कि सारे शरीर का कर्ता कौन है? बोलता कौन है? और ये सब कौन कर रहा है। ये सब न्यारी–न्यारी बातें हैं। सो तुम गुरू द्रोही मत बनो। ऐसे कर्ता मत बनो। द्रोही कैसे बनते हो? भजन तो पांच मिनट नहीं कर सकते हो। झगड़ा बाजी करना शुरु कर देते हैं। न वह आप भजन करते हैं और न ही और को करने देते हैं। इस झोटे की तरह पानी को गंदला करके एक तरफ हो जाते हैं। कई आते हैं और कहते हैं कि वहां भीड़ हो जाएगी। मैं पूछता हूं फिर क्या बात हुई? आपको क्यों फिक्र है? वह तो फिक्र करने वाले को ही है।

एक आदमी कहता है कि मेरी लड़की की शादी है। कितनी ही बड़ी बारात आ जाए। तो बारात लाने वाले को क्या फिक्र है? उसका तो बुलाने वाले को ही फिक्र है। वह बारात को ठीक रखेगा

या क्या करेगा? इसी तरह से इसका तो उस कुल मालिक को ही फिक्र है। बारात भी किसकी है। ये बारात तो सारी एक ही बारात में समा जाती है। जब यह जीवात्मा व सुरत लड़की का रूप बनकर उस मालिक के घर में पहुंचेगी, उस राधास्वामी दयाल में, उसके शब्द में पहुंचेगी तो इसके साथ वाली बारात कहां जाएगी? वह तो उसके अंदर ही समा जाएगी। कौन सी बारात? जैसे सूरज चमक रहा है उसकी किरणे निकल रही हैं। जब सूर्य छुपता है तो किरणे उसी में समा जाती हैं। इसी तरह से जब हमारी सुरत वहां जाएगी तो ये पांच तत्व कहां जाएंगे? कहां जाएंगे तीन गुण और कहां जाएंगी दस इन्द्रियां? कहां जाएंगी 25 प्रक ति? ये सारे के सारे शनैः शनैः उसमें सिमटते चले जाएंगे। मैं ये बातें पहले बता गया। जैसे सब तत्व सिमट कर एक तत्व में आ जाते हैं। इसी तरह एक शब्द में जितनी भी बिखरी हुई चीजें थी सारी उसी में समा जाती हैं। आप पूछोगे कैसे समा जाती है? जैसे लट्टू (ग्लोब) छोटा सा होता है सारी स ष्टि का नक्शा उसी में समा जाता है। यह भी जाने दीजिए। मकड़ी छोटी सी होती है। अपने अन्दर से अनन्त जाला निकालती है। इतना जाला बना लेती है कि लेने के देने पड़ जाते हैं। वह जाला उसके अंदर से ही आता है। सो हमारे अंतर में बड़ा भारी मसाला है। वह कितना भारी है? उसकी हम तलाश नहीं करते हैं। अगर तलाश करते तो काम बन जाता। इसीलिए कहते हैं–

भाई हंसा चाल बसो उस देश।

वह देश कौन सा है? हमारा यह देश तो काल माया का है। उससे सहारा लेकर ही जाना होता है। सहारा किसका लोगे? आप लोग कितनी दूर से आते हो। कोई भी बिना सहारे नहीं आता है। कोई सतगुरु के दर्शन करने का सहारा लेकर आता है। कोई सत्संग का सहारा लेकर आता है। सब के सब किसी न किसी

सवारी पर चढ़कर आते हैं। सवारी किसे कहते हैं? जिसे सतगुरु का प्यार है, वह प्रेम की सवारी पर चढ़कर आता है। जिसने दर्शनों की इच्छा की है। वह दर्शन की सवारी पर चढ़कर आता। वह श्रद्धा और विश्वास लेकर आता है। कोई–कोई इस तरह भी आता है कि देखें तो उस पाखण्डी का खेल क्या है? ये लोग झूठ बोलते हैं या सच बोलते हैं। उसे देखेंगे कैसा है? अब तो उसका ढांचा भी बिगड़ गया होगा क्योंकि पुलिस ने खूब मारा होगा। खूब तोड़ दिया होगा बेचारे देखने के लिए भी आते हैं। मेरी माता बहनों को इस बात से बड़ी तकलीफ हुई है। सो हर तरह के आदमी आते हैं। ऐसे आदमी विरोध की सवारी पर चढ़कर भी आते हैं। पर वह विरोध की सवारी उसके लिए नर्क का कुंड बन जाएगी। उसे खा जाएगी। यही तो हमारी खुराक है। लोग कहते हैं–यम के दूत आते हैं। कई कहते हैं कि राम आ गया, क ष्ण, शिव जी, ब्रह्मा व विष्णु जी आ गए। ये कौन हैं? ये हमारे पुण्य होते हैं। जो हमें राक्षस दिखते हैं वे हमारे पाप हैं। यदि हम खोटे कर्म करते हैं तो वे राक्षस बनकर आ जाते हैं। हम अच्छे कर्म करते हैं तो वे राम, क ष्ण, देवी–देवता या गुरु बनकर आ जाते हैं। ये हमारे कर्मों का खेल है। यही मैंने पहले एक बात कही थी–

कर्म प्रधान विश्व रचि राखा।
जो जस करहिं तस फल चाखा।।

कर्म प्रधान होता है। कर्म से ही हमें योनि मिलती है और योनि से हम कर्म कर लेते हैं। सो कर्म सब से बड़ा है। हमें वही कर्म करना चाहिए जिससे उस देश में पहुंच जाएं जहां फिर नहीं मरना है। सो बुद्धि भी उसी में से निकलती है और उसी में समा जाती है। पर फिर भी अपना न्यारा काम दिखा कर चली जाती है। सो ही कहा है–

हां भाई हंसा, चाल बसो उस देश, जहां का बासी फेर ना मरे।

अब ये काफी बातें मुड़–मुड़ कर आपको बता गया हूं कि उस देश का वासी फिर नहीं मरता है। आगे कहते हैं–

अगम निगम दोए धाम, वास तेरा परे से परे।

क्या कभी आपने ये सोचा–अगम और निगम किसे कहते हैं? अगम कहते हैं जो काल महाराज की हद से आगे चला जाता है और निगम कहते हैं जो उसके नीचे रह जाता है। ये दो स्थान या धाम हैं। इसके बीच में एक दीवार है। उस दीवार को तोड़कर जब आगे चले गए तो सतखण्ड आ जाता है। उस दीवार के इस तरफ रह गए तो काल माया का देश रह जाता है। जैसे मैंने पहले बताया है वहां पर दो धारें बनती हैं–ज्योति और निरंजन की। ये काल माया का देश है। आगे जो देश है उसे अगम कहते हैं और जो पीछे या नीचे रहते हैं उसे निगम कहते हैं। वास तेरा परे से परे है। यह मैं ही नहीं कहता हूं। यह तो नानक साहब भी कहते हैं–

जो सतलोक से आगे ध्यावे।
वो अलख अगम की गति पावे।।

स्वामी जी भी कहते हैं–

देख प्यारे मैं समझाऊं रूप हमारा न्यारा।
वो तो रूप लखे नहीं कोई, जब तक देऊं न सहारा।।

जब तक मैं सहारा नहीं देता हूं उस रूप को कोई देख ही नहीं सकता है। फिर कहते हैं–

सतपुरुष का रूप दिखाऊं अलख अगम दर सारा।
इसके आगे राधास्वामी, वह निज रूप हमारा।।

यह स्वामी जी महाराज की वाणी है। अब कोई कहता है कि वहां वह राधास्वामी दयाल था। वह तो छोड़ कर यहां आ गया होगा? तो वह देश तो खाली हो गया होगा? जब समुद्र टूट कर चल पड़ता है तो पीछे खाली तो नहीं होता है। वह तो ज्यों का त्यों ही रहता है। सूर्य तो एक है पर वह असंख्य घड़ों में दिखाई

देता है। वही एक सब की जगह पूरी कर देता है। उस समुद्र में से कितनी ही धाराएं निकलती हैं और कितने ही जीव जन्तु निकलते हैं। वे अपने–अपने कर्मों में फंसकर रह जाते हैं। उसमें जाने वाला ही यहां समा जाता है। इसीलिए प्रेमियो ! बताया है कि वह निज रूप हमारा है। यह निज रूप राधास्वामी दयाल का है।

अगम निगम दोऊ धाम, बास तेरा परे से परे।

वे दोनों राधास्वामी मत के नहीं थे। पर वाणी तो उसी तरह से कह गए। जो स्वामी जी ने कहा वही उन्होंने कह दिया।

अगम निगम दोऊ धाम, वास तेरा परे से परे।
वहां वेदो की गम नाहिं ज्ञान और ध्यान भी डरे।।

वहां पर वेदों की गम नहीं है। अब कोई वेदान्ती भी होगा और हम भी वेदों के प्रेमी हैं। वेदों का जो खण्डन करता है वह नास्तिक माना जाता है। वेदों का खण्डन मत करो। वेद हमारे शेर हैं। पर उस महात्मा ने इनका खण्डन नहीं किया। उसने तो यही कहा है कि वहां पर वेदों का गम नहीं है। ज्ञान और ध्यान भी यहीं रह जाते हैं, जब अभ्यासी उस अवस्था पर पहुंच जाता है। मैंने तो महात्मा देखे हैं। कैरू गांव में एक महात्मा था। क्या उसका ज्ञान ध्यान था? तिगड़ाने में एक छोरों वाला बाबा मस्त रहा करता था। बल्कि बहुत उम्र का था। वह परमहंस गति का था और ज्ञान और वहां ध्यान दोनों ही नहीं हैं। वे मस्त रहते हैं और ज्ञान ध्यान से आगे चले जाते हैं। वेदों की गम कहां तक है? वेद तो तीन गुणों में रह जाते हैं और ब्रह्म का वर्णन करते हैं। जब कोई महात्मा पार ब्रह्म की बातें करता है तो वेद तो खुद ही कह देते हैं–**नेति-नेति (ने + इति)।** इसीलिए वेद हमारे शेर हैं। पर जो बात उन्होंने कही हैं मैं वे बताता हूं। पर एक बात आ जाती है। अगर कोई कहता है कि परमात्मा का सारा ही ज्ञान वेदों में आ गया है। यह गलत है। गलत बातें मत करो। मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं। पर मैं

आपको बातें बता दूंगा। सारा ज्ञान परमात्मा का अगर उन वेदों में आ जाता है तो परमात्मा एक देशी ही बन गया। परमात्मा तो सर्वदेशी है। उसका ज्ञान वेदों में भी है और वेदों से बाहर भी है। उसका ज्ञान न तो वेदों में समा सकता है और न ही वेदों से बाहर समा सकता है। सारी दुनिया ही उसके ज्ञान से भरी पड़ी हैं। उसको कोई न्यारा भी नहीं कर सकता और इकट्ठा भी नहीं कर सकता है। वह तो जैसा है वैसा है। उसको क्या कहते हैं? जब आगे चलोगे तभी पता लगेगा। ज्ञान ध्यान भी कुछ नहीं है। आप कहोगे यह बात कैसे हो गई? जब ज्ञान और ध्यान भी नहीं हैं तो भक्ति कैसे होगी? ये ज्ञान और ध्यान तो पहले ही करने पड़ते हैं जब तक उस मंजिल पर नहीं पहुंच जाते हैं। जब मंजिल पर पहुंच जाते हैं तो जीवन सफल ही हो जाता है। लड़की की जब तक शादी नहीं होती तभी तक उसको कंवारी कहते हैं। शादी होने के बाद उसे कोई भी कंवारी नहीं कहता है। फिर तो उसको कोई भाभी कहेगा और कोई घरवाली कहेगा, कोई बहू और कोई कुछ कहता है। उसका नाम बदल जाता है और जब उसके बच्चे पैदा होते हैं। फिर उसको फलां की मां कहना शुरू कर देते हैं। फिर कोई उसको मां कहेगा और फिर कोई उसको नानी कहेगा। उसका रंग बदलता चला जाता है। बुढ़िया दादी को अगर कोई कन्या कुंवारी कह दे तो वह उस बात को नहीं मानेगी। वह लड़ भी पड़ेगी। ये रंग तो बदलते चले जाते हैं। इसी तरह सुरत के भी रंग बदलते चले जाते हैं। जब उतरती है तब इसका कुछ रंग होता है और फिर चढ़ती है तो इसके कुछ और रंग होते हैं। महात्मा लोग इसीलिए कहते हैं–जब वह उस जगह पर पहुंच जाती है, वहां ज्ञान और ध्यान नहीं होता है। तो फिर वहां क्या है? कबीर साहब ने भी तो कहा है–

पाप पुण्य दोनों नहीं म्हारी हेली, निर्गुणियों के देश।

अर्थात् वहां पर न पुण्य है और न पाप है। ये तो उरला ही व्यवहार है। जो कहा है वह बिल्कुल सोलह आने सही कहा है। वे सच्चे साधु थे। उन्होंने बड़ी ऊंची बातें कही हैं। वहां ज्ञान और ध्यान कुछ भी नहीं है। इनका क्या करना है। वह तो और ही वस्तु है। कैसे?

बिन धरणी की बाट, चरणों के बिना गमन करे।

आप चलते हो तो धरती पर चलते हो। वहां तो बिन धरणी (धरती) की बाट (राह) है।

बिन श्रवण सुन ले, बिन नैनों दरस करे।

क्या ये बातें मैंने सत्संग में नहीं बताई थी?

पद बिन चलहिं, सुनहिं बिन काना।
कर बिन काम करे, विधि नाना।।

यही तुलसीदास जी की वाणी आती है। यही भानीनाथ जी की मिल गई कि बिन श्रवण सुन ले। वहां कानों के बिना ही सुना जाता है। वहां तो बिना देही का देव होता है। उसने सारी ही बातें कह दी। बिन धरणी की बाट आप कहोगे कि वह बिन धरणी की बाट। उस बिन धरणी की बाट पर कबीर साहब ने कहा है कि सोने वाले के ऊपर खाट। कबीर साहब तो यह कहते हैं कि चले मुसाफिर थके बाट और सोने वाले के ऊपर खाट। फिर कहा है–

चूल्हा जले और आग थर्रावे।
पाने वाले को रोटी खावे।।

कबीर साहब की ऐसी उलटी बातें हैं। इनको उल्टी न कहो। ये सुलटी बातें हैं। संत मत का मार्ग ही ऐसा है। संतमत की ये बातें भी तो सुनी होंगी–

तुम देखो साधो! नैया में नदिया डूबी जा।
एक अचम्भा हम सुना, बन्दर दूही गाय।
दूध, दही को आपे खा जा भया बनारस।।

तुम देखो साधो, नैया में नदिया डूबी जा।।
कीड़ी चाली सासरे नौ मन तेल लगाय।
हाथी मार बगल में दीन्हा ऊंट लिया लटकाय।।

अब ऐसा कभी सुना है? ये अचम्भे की बातें नहीं है। जब ये सुरत अंतर में चलती है तो ये मन क्या है? इन नौ द्वारों को खाली कर जाती है। जब यह आगे चलती है तो क्या करती है? हाथी मार बगल में दीन्हां, ऊंट लिया लटका। अब ये हाथी ऊंट कौन है? महात्मा लोग इसे घटा लेते हैं। हाथी यह अहंकार होगा। जब से आगे चलती है तो उसका अहंकार खत्म हो जाता है। ऊंट कौन है? ऊंट क्रोध होगा। उस सुरत के काम और क्रोध सभी काबू में आ जाते हैं। फिर आगे चली जाती है। फिर किस तरह? इसी शब्द में और भी कह दिया–

पापी पापी पार उतर गए, धर्मी डूबे मंझदार।

फिर इसका मतलब यही हुआ कि सब ही पाप करना शुरू कर दो। सो यह पाप नहीं है। गोरखनाथ ने कहा है–जो इन्द्रियों को कसे सो ही कसाई। जो इंद्रियों को पकड़ लेता है, उनको काबू में कर लेता है, वह पापी माना जाता है। जिसकी इंद्रियां खुली चरती हैं, वह धर्मात्मा है। वह धर्मात्मा मारा जाएगा। धर्मात्मा मारा गया कि नहीं? और फिर जिसने अपनी इंद्रियां काबू में कर ली हैं वे पापी माने जाते हैं। क्योंकि मारता है वह पापी है पर उसका मुक्ति का दरवाजा खुला है। वह तिर जाता है। यह इन्द्रियों का ही तो सारा खेल है। यह उल्टा मार्ग है। सो सभी संत इस बात को समझा–समझा कर आगे चले हैं और यही भानीनाथ का और उनका खेल था। उन्होंने भी यही बातें कही हैं–

बिन धरणी की बाट।

अर्थात् जब सुरत चलती है, वहां धरणी नहीं है। पता नहीं फिर भी सुरत कितने योजन चलती है। ज्योतिषी कहते हैं कि जब

रोशनी तारा मंडल से चलती है तो 380 दिनों में नीचे आती है। उसकी चाल भी बड़ी तीव्र है। एक सैकिण्ड में कई योजन का फासला तय करती है। कई सौ कोस चलती है। यह मुझे याद नहीं है। किसी से ये बातें सुनी थी। पर सुरत की चाल तो इससे भी तेज है। आप कहोगे–क्या उस रोशनी से भी तेज चाल है? उस रोशनी से तेज चाल तो एक और छोटी सी चीज की भी है। किसकी है? वह बिजली की है। जहां तक भी बिजली का कनैक्शन है उसका एक बटन दबा दो। इतनी ही देर में सारे देश की ही बिजली बंद हो जाती है। इतनी जल्दी सितारों की रोशनी नहीं चलती है। पर जो बिजली की चाल है कि बटन दबाते ही बंद हो जाती है। इस बिजली से भी कई गुणा चाल सुरत की है। जब तक हाथ लगाकर बटन दबाओगे तब तक तो सुरत हर जगह ही घूम कर आ जाएगी।

जहां–जहां भी गए हुए होते हैं इतनी ही देर से वह सुरत उन सभी चीजों को देख कर आ जाती है। उसका नाम सुरत है और इसकी इतनी तेज चाल है कि अभ्यास करते हो तो उस समय पता चलता है। यह बड़ी भारी तेज है। तब यह बिन धरणी की बाट पर चलती है। वह बिना धरणी की बाट कौन सी है? जब यह नौ द्वारों को खाली करके ऊपर की मंजिलों पर चढ़ती है, वही बिन धरणी की बाट कहलाती है। बिन धरणी की बाट, ये कितनी सीधी–सादी बातें हैं। सो ही कहा है–

बिन धरणी की बाट, चरणों के बिना गमन करे।

वहां पर चरण तो नहीं हैं। क्या कोई चलता हुआ दिखता है? वहां पर न तो चरण हैं और न ही शरीर है। कुछ भी नहीं है और रास्ते में असंख्य नजारे आते हैं। बड़े–बड़े नजारे आते हैं। फिल्म सी चलती है। अभ्यासी देखता हुआ चला जाता है।

बिन धरणी की बाट चरणों के बिना गमन करे।
बिन श्रवण सुन ले, बिन नैनों दरश करे।।

उस समय बाहर के कान तो बंद हो जाते हैं। अंतर के कानों से सुना जाता है। **बिन नैनों दरश करे।** यही कबीर साहब जी की वाणी है। नानक साहब ने भी यही कहा है–

तीनों बंद लगाय के सुनो अनहद टंकोर।
नानक सुन्न समाध में नहीं सांझ नहीं भौर।।

पार्वती जी को शिव जी महाराज भी शिव पुराण में यही बताते हैं–हे पार्वती ! सवेरे उठो, ब्रह्म मुहूर्त में ये द्वार बंद करो। इन द्वारों को बंद करके उस शब्द की धुनि को सुनो। उस एक शब्द की ध्वनि में से नौ ध्वनियां निकलती हैं। दसवीं ध्वनि वह है जिसमें से ये नौ ध्वनियां निकलती हैं। उन ध्वनियां को सुनते–सुनते चले जाओ। फिर उन्हीं धुनियों को समेट कर दसवीं ध्वनि में आ समाओ। ये मैं स्वयं सुनी हुई बातें कहता हूं। मेरे सत्संग को जो समझ जाएगा उसका जीवन सफल हो जाएगा। सत्संग करना ही यह है। उस ध्वनि को समझ जाओ। यही चरणदास जी ने भक्ति सागर में खुल्लम–खुल्ला कह दिया–

एक भंवरा सा गूंजसी, दूजे धूं-धूं हो।
तीजे शब्द ज्यूं शंख, चौथे घंटा सो।।
चौथे घंटा सो, पांचवें ताल ज्यों बाजे।
छठे ज्यों मुरली नाद, सातवीं भेरी ज्यों गाजे।।
आठवे म दंग नाद, नफीरी नौ।।
दसवें गर्जन सिंह सी, चरण दास भले सुन लो।

वे कहते हैं कि ध्वनियां सुन कर देखो, तुम्हारे अंतर में ध्वनियां होती हैं। यही शिवजी ने कह दिया। यही कबीर, दादू, पलटू सभी ने कहा है। सभी संतों का एक निशाना है। संतों की बातें सभी बताते हैं। शब्द की बड़ाई करते हैं। सभी कहते हैं कि

शब्द विदेह है वह देह नहीं धरता है।

शब्द-शब्द सब ही कहैं, वह तो शब्द विदेह।
जिव्हा पर आवे नहीं, निरख परख कर ले।।

पर निरख परख करके क्या करेगा? फिर तो–

हिल मिल खेलूं शब्द में अंतर रही न रेख।
समझों का मत एक है, क्या पण्डित क्या शेख।।

समझों का मार्ग एक है। इसीलिये महात्मा कहते हैं–

आए एक ही ठौर से, उतरे एक ही घाट।
समझों का मत एक है, अनसमझे बारह बाट।।

जो समझ गया तो सभी संतों की सैन इसमें मिलती हैं। कौन सी में मिलती है? ये कली पहले बताई है।

चाल बसो उस देश, जहां का बासी फेर मरे।

इसमें भी मिलती है और इससे अगली में भी मिलती है–

बिन धरणी बाट चरणों के बिना गमन करे।
बिन श्रवण सुन ले, नैनों के बिना दरश करे।।

कौन है ऐसा भाई जो इन बातों को गलत बताता है। आकर बात करो अगर ग्रंथों में ऐसी बातें नहीं हों तो। पर हम उन ग्रंथों के चोर बन गए हैं। हमने अपना रोजगार बना लिया। कहानियां तो सीख ली पर अभ्यास नहीं किया। तजुर्बा करके नहीं देखा। उन कहानियों से न तो कोई तिरा है और न तिरेगा। अगर कोई कहानी कहने से तिरा हो तो ये कितनी ही माई–बाई व्रत करती हैं। पता नहीं कितनी कहानियां कहती हैं। क्या ये तिर गई? ये तो बातें बनाई हुई हैं। कहानी कह कर व्रत खोल लो। वह कहने वाला अपना अनाज और पैसे ले जाता है और सुनने वाली अपनी रोटी खा ले। पेट भर जाए। उस कहानी का अगर तुम तजुर्बा करके देखो, तो पहुंचोगे। वह कहानी तो बड़ी लंबी चौड़ी है। मेरी छोटी उम्र थी। मैंने तो कहानियां ही सुनी हैं। कार्तिक में नहाया भी

करता था। चादर ओढ़ कर सवेरे ही चला जाता था। कार्तिक मैं कई बरस नहाया हूं। पर मैं खण्डन तो नहीं करता। कार्तिक का स्नान तो सभी के लिए अच्छा है। क्योंकि उस वक्त खून बदलता है। फिर चैत, वैशाख में भी नहाते हैं। उनमें भी सवेरे ठण्डे पानी से नहाना बड़ा अच्छा है। जैसे कई ऐसे त्यौहार भी आते हैं। उनमें बासी खाया जाता है। यह भी बड़ा अच्छा है। पीपल का पूजना बड़ा अच्छा है। स्त्री जाति को तो एक न्यारी जिन्दगी मिलती है इसकी पूजा से। पर मुक्ति इससे कभी भी नहीं होगी। तुलसी साहब ने बहुत ही कठोर बातें कह दी हैं कि पीपल के पूजने से तो तुम कानखूजरा बनोगे। क्योंकि उस पीपल में तुम्हारी आशा हो जाएगी।

यह तो इसीलिए बताया जाता है कि व्रत शरीर को मजबूत रखने के लिए करते हैं ताकि बीमारी न बने। इसलिए व्रत करते हैं। पीपल में पानी डालते हैं तो कई बीमारी खत्म हो जाती हैं। इसमें से पानी डालते ही गैस निकलती है और हमारी बहुत बीमारियां ठीक हो जाती हैं।

मैं आप लोगों को सच्चाई से बताऊंगा कि आंवल के एक सेठ और सेठानी दोनों मेरे पास आ गए। सेठ ने कहा–इसमें भूतनी बड़ी हुई है। इसको देखो। मैंने कहा–ये तो दूर हो जाएगी। मैं बताऊं वह काम कर लेना। तुम्हारे गांव में जो सबसे दूर कुआं हो उस पर जाना है और उस कुएं में से पानी निकालना है। अपने हाथों से पानी खींचे और पहले दिन एक बाल्टी पानी पीपल की जड़ में डाल दे। पानी लोटे से नहीं डालना और फिर दूसरे दिन दो बाल्टी डाल दे। तीसरे दिन तीन और चौथे दिन चार डाल दे। एक हफ्ते में सात बाल्टी हो जाएंगी। फिर सात बाल्टियों का नेम बना लेगी। रोज डालती रहे। सवेरे ही जाना है। यह काम करना है। आप लोगों को धर्म से कहता हूं सच्चाई के साथ। उसने आकर

बताया कि वह तो ठीक हो गई है जी। मैंने कह दिया था कि यह काम दो महीने करना है। उसकी क्या भूतनी थी? उसके दिमाग में फतूर था। पीपल में पानी डालने से उसकी गैस से उसकी बुद्धि ठीक हो गई। फिर घूमना फिरना और पानी खींचना था।

पहले माइयों बाइयों को इतनी बीमारियां नहीं होती थी। वे पीसती बहुत थी। दूध बिलोया करती थी। बहुत काम करती थी। हाथ मजबूत होते थे। वे हाथों में दो–दो सेर की टाडें पहनती थी। आज वाली तो दो सेर की टूम पांव में भी नहीं पहन सकती है। हाथों में अगर इतना भारी जेवर वे टाडं पहन लें तो मर जाएं। कहेंगी–ये क्या विघ्न कर दिया? वे सहन ही नहीं कर सकती हैं। दो–दो सेर की टाड होती थी और हाथों में चांदी की चूड़ियां भी पहनती थी। गले में दो सेर की हंसली पहनती थी और धंधा करती रहती थीं। पांव में भी छः–छः, सात–सात टूम होती थीं। आज तो कोई नहीं पहन सकती है।

वो टाइम चला गया है। उस वक्त घी दूध खाती थी। आज वाली जापे में तेल की मालिश करवा लेंगी पर घी नहीं खाया जा सकता है। कहती हैं कि घी भाता नहीं है। फिर उनकी औलाद गिरड़ी को कैसे घुमा देगी। तुम औलाद को दोष देते हो। जब बच्चे पैदा होते हैं तो अस्पताल में ले जाते हो। अस्पताल में घूंटी नर्स देगी। लड़की पर नर्स का असर पड़ेगा कि नहीं? लड़के पर भी असर पड़ेगा। वे फिर लायक कहां बनेंगे? वे तो नालायक ही बनेंगे। हमारे देश में तबाह हो जाते थे। तो भी अपने मां–बाप के हुक्म को मोड़ा नहीं करते थे। क्योंकि वे उनको घूंटी दिया करते थे। इसमें भी एक ताकत होती है। यह मैंने सांइस का तजुर्बा बताया है। हमारे ऋषियों की चाल बड़ी टेढ़ी थी और उनके विचार बड़े अच्छे थे। उस वक्त क्या होता था? जब बच्चे पैदा होते थे तो दादी घूंटी देती थी या दादी की जूती सिर पर रखा करते थे कि

इसी के नीचे रहना। उसके परमाणु निश्चय ही आते थे। वे इस तरह से उनको बना देते थे कि वे कभी गिरा नहीं करते थे। आज तो बाप कहता है कि मेरा कहा नहीं मानता। फिर क्या तुझे पता है कि घूंटी किस ने पिलाई थी? मां कहती है कि मेरा कहा न तो छौरा मानता है, न छौरी मानती है। भाई घूंटी किसकी है। घूंटी तो न तेरी है, न तेरे धनी की है, न सासू की है और न ससुर की है। सास ससुर को तो नजदीक भी नहीं आने देती है। कह देंगी कि उनको तो पड़े ही रहने दो। उनको तो मैं अपने बच्चों का मुंह भी नहीं दिखाऊंगी। फिर क्या करेगी? कह देगी कि अस्पताल में जापा करके आ जाएगी। इस तरह के निर्भागों के तो हाथ भी नहीं लगने दूंगी। इसीलिए तो आगे जाकर डूबोगे। तुम उन निर्भागों के हाथ नहीं लगने देते हो।

वे सास ससुर तो निर्भाग बन जाते हैं। इसीलिये तो देश का सारा ढांचा बिगड़ता आ रहा है। अब लोग सुधारते हैं तो गेहूं की नसल सुधार लो। कहते हैं कि पशुओं की नस्ल सुधार लो। अरे! अपनी नस्ल भी कोई सुधारता है? अपने ऋषि–मुनियों की चाल को छोड़ते जा रहे हो। आप कहोगे कि आप ब्राह्मणों की बड़ाई करते हो। हां, मैं उनकी बड़ाई करता हूं। एक ब्राह्मण सारे देश का कल्याण कर सकता है। तो आप लोग कह सकते हो कि आप तो संत हो, कल्याण करो।

मैं संत तो नहीं हूं। मैं तो संतों की ड्यूटी बजाता हूं। मैं आप लोगों का सेवक हूं। मेरी सेवकाई में कोई कसर आती हो तो उलहाना दे देना। मैं संत नहीं हूं। मैं आपका सेवक हूं। संत तो उस दिन कहना जब मैं अपने कपड़े यूं के यूं साफ रख कर चला जाऊं, अपने घर को। फिर कह देना। इसी तरह से मैं दावे से कह देता हूं कि मेरे सतगुरु परम संत थे और वे मेरे लिए ही आए थे। आप भी फिर कह देना।

आपने यह मिशाल नहीं सुनी है क्या? एक जाट की बेटी भैंस को पानी पिलाने जा रही थी। उसने कटड़े की पूंछ पकड़ रखी थी। उसे हिला रही थी। एक बाबा जी बैठे थे। उसने बाबा से पूछा–बाबा! बता मेरे कटड़े की पूंछ बड़ी है या तेरी मूंछ बड़ी है? बाबा जी ने कहा–बेटी फिर बताऊंगा। अभी नहीं बता सकता। मौका ऐसा बैठा कि महात्मा का चोला छूटने का टाइम आ गया। लड़की उसके पास चली गई कि बाबा जी ने वह बात तो नहीं बताई। ऐसा न हो कि मर जाए। चोला छूटने का टाइम था। उसने पूछा–महाराज जी ! वह बात नहीं बताई आपने? बाबा ने कहा–बेटी कौन सी? लड़की ने कहा–मैंने आपसे उस दिन पूछी थी कि मेरे कटड़े की पूंछ बड़ी या आपकी मूंछ बड़ी है। बाबा जी ने कहा–बेटी ! कटड़े की पूंछ क्या करेगी? वह तो पूंछ है। मेरी मूंछ बड़ी है। लड़की ने कहा–आपने यह बात उस दिन नहीं बताई। बाबा जी ने कहा–उस दिन तो मेरी जिन्दगी बाकी थी। आज मैं जा रहा हूं और मैं अपनी मूंछों को पवित्र लेकर जा रहा हूं। इसीलिए कहता हूं कि मेरी मूंछे बड़ी हैं। पहले मैंने इसीलिए नहीं कहा था कि ऐसा न हो कहीं रास्ते में कट न जाएं। मैं बड़ी बता देता और कोई काट भी सकता था या मेरा ही मन डावांडोल हो सकता था। विषय–विकारों में पड़कर बट्टा लग जाता तो कट जाती कि नहीं मूंछे? इसी कारण से मैं बता नहीं सका। आज मैं सुखाला जा रहा हूं। इसीलिए कहता हूं प्रेमियो ! किसी को दोष न दो। हम आप ही गिरते जा रहे हैं। हम ही अपनी बात को खोते जा रहे हैं। महात्मा लोग जीवन बनाने के लिए और पवित्र शिक्षा देने के लिए आते हैं। उनकी शिक्षा माने तो वाह ! वाह ! और न माने तो उनकी मर्जी है। सारी तरह के आदमी, माई–बाई आते हैं। सो। मैं यही बता रहा था कि–

बिन धरणी की बाट, चरणों के बिना गमन करे।

जब सुरत छठे चक्कर से ऊपर चलती है, वही बिन धरणी और बिन चरणों की बाट है ये चरण तो यहीं भूमि पर ही रह जाते हैं। पर वह सुरत नहीं निरत चलती है। सुरत सुनती है और निरत देखती है और वह मंजिलें–२ अपने घर पहुंच जाती है। वह बिन श्रवण सुनती है और बिन आंखों के देखती हैं। ये कान काम नहीं करते हैं। तो कौन से कान काम करते हैं? सुरत के कान सुनते हैं। ये आंखें भी काम नहीं करती हैं। फिर कौन सी आंखें काम करती हैं? सुरत की आंख काम करती है और सुरत की जुबान ही बोलती है। उसे पराबाणी कहते हैं। उसका तजुर्बा होने से पता लगता है। इसलिए अभ्यास करके आगे चलो। भानीनाथ ने कहा है–बिन देही एक देव प्राणों के बिना सांस भरे। वह कहां सांस भरता है? यह नीचे का शरीर तो है ही। जब वह सुरत चलती है और दर्शन करती है उस नूरी गुरु के। वहां जगमगाहट होती है। नितानन्द जी कहते हैं–

धर दुरबीन चश्म को फेरो, जगमग जोत जरी है।
कहीं गुप्त कहीं प्रगट, सब घट वस्तु भरी है।।

सभी शरीरों में और सभी के घर में वह वस्तु भरी है। पर सब महात्मा जानते हैं किस चीज में परमात्मा की अंश, वह आत्मा है। पर कइयों ने अपनी आत्मा को गंदा कर लिया है। मल, विक्षेप और आवरण चढ़ा लिए हैं। फिर वे दूसरों की निंदा बुराइयां करके गिर जाते हैं। खोटे कर्मों में पड़कर गिर जाते हैं। कई भागी अपनी आत्मा का ख्याल रखते हैं। वे मैली नहीं होने देते। जब वह मैली नहीं होती है तो वह आगे चला जाता है। इसीलिए कहते हैं–

मेरी चूंदड़ी के लाग्या दाग पिया हो।
धोवत डोलूं दाग न छूटे तन मन कुर्बान किया हो।

मैंने तो अपना तन, मन सारा ही कुर्बान कर दिया है। पर ये दाग नहीं उतरता है। वह दाग कब उतरेगा? अभी तक तो मन

कुर्बान ही नहीं किया है। अगर कुर्बान कर देते तो दाग उतर जाता है। फिर कहते हैं–

प्रेम नगरिया के घाट, अधर एक दरिया बहे।
संत करें अस्नान, दूजा कोई नहा ना सके।

क्या संत ही वहां स्नान कर सकते हैं? हां, दूसरा तो वहां नहीं नहा सकता है। आप ये प्रश्न कर सकते हो। मैं बताता हूं कि वहां संत ही नहा सकते हैं। अब उन बातों को ले लो। जो संत बनता है वही नहाता है और कोई जा ही नहीं सकता है। वहां जीव से ही संत बनता है? कब संत बनता है? वहां प्रेम नगरिया के घाट अधर दरिया बहता है। तुम्हारे दिल में प्रेम नगरिया के घाट अधर दरिया बहता है। जब तक तुम्हारे दिल में प्रेम नहीं है तब तक तुम सत्संगी नहीं हो। तुम्हारे दिल में प्रेम है तो उस घाट पर पहुंच जाओगे। सुना होगा–

ये तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीश काट पग तले धरे, तब पहुंचे घर माहिं।।

अब प्रेम की बातें हैं यह प्रेम कितनी ऊंची दौलत है?

दादू पाती प्रेम की, बांचे बिरला कोय।
वेद शास्त्र पुराण पढ़े, प्रेम बिना क्या होय।।

प्रेम के बिना तुम कितनी ही पोथी पढ़ते रहो। तुम्हारा जो ख्याल है वह पूरा हो जाएगा। पर उस घर नहीं पहुंच सकते। यह तो कहानी सुनाना है। उन कहानियों को मौखिक याद कर लो। चाहे वैसे कर लो। उन कहानियों के उसूल पर चल पड़ोगे तो तिर जाओगे। अगर कहानी कहते सुनाते ही रहे जैसे मैं आपको बातें सुनाता रहा तब तो फिर कुछ भी नहीं होगा। अगर मेरा तजुर्बा ही नहीं है और मैं आपको ये बातें बताता हूं तो मुझे लानत है। मेरा हक कोई नहीं बताने का। वही ये बातें बता सकता है जिसने तजुर्बा कर लिया हो और उस मंजिल पर जा चुका हो। फिर आप

लोग प्रश्न कर सकते हो–अगर आप वहां पहुंच चुके हो तो फिर अपनी करामात दिखाओ? तुम करामात देखना ही नहीं चाहते हो। मैं तो रोज ही यहां करामात दिखाने के लिए आता हूं। आप करामातों को क्या समझते हो? यदि तुम्हारी जेब में कोई नोटों के नम्बर बता दे तो क्या इसको करामात कहते हो? ये तो मेस्मरेजम वाले भी बता देते हैं। मन की तुम्हारी बातें कोई बता दे तो क्या इसे करामात बताते हो। ये तो मेस्मरेजम वाले भी बता देते हैं। क्या तुमने ये बातें नहीं देखी? चादर उढा कर लेटा देते हैं और वह सब कुछ बता देता है। तब वे पूछते हैं कि इसके मन में क्या–क्या है। वह बता देता है कि ये–ये इसके मन की बातें हैं। फिर पूछते हैं कि इसकी जेब में क्या है? वह फोरन कहता है कि इसकी जेब में इतने नोट हैं और उनके फलां–फलां नम्बर है। फिर अगर मैं भी यही बातें बताऊं तो मुझ में और उस मेस्मरेजम वाले में क्या अंतर रहेगा? फिर तो हम एक जैसे ही रह गए। ये करामातें नहीं है। तो फिर वे कौन सी करामाते हैं? क्या तुम चाहते हो कि ये यहीं बैठा–२ अपनी चादर में से निकाल कर पेड़े और रुपये दे दे या ये सांग दिखा दे? तो क्या ये करामातें हैं? ये करामातें तो बाजीगर बहुत दिखाते हैं और वे चार–२ पैसे मांगते फिरते हैं। ये उनकी करामात हैं। वह बाजीगर का ही खेल है। बाजीगर तो ऐसे हैं कि वे बाग लगा देते हैं। वे चीजें ला देते हैं। आदमी का सिर काट कर दिखा देते हैं। क्या ये सब बाजीगर करते हैं कि नहीं? फिर उन बाजीगरों में और महात्माओं में क्या फर्क है? ये करामाते नहीं हैं तो फिर करामाते कौन सी हैं? क्या आसन लगाकर दिखाना करामात है? नटों की लड़कियां बांस पर तीन–तीन कलाएं कर जाती हैं। ऊपर चौंकी बांध लेती है। आपने भी देखी होंगी? उस चौकी पर वे कला करती हैं और फिर वे बहुत ही आसन लगाकर दिखाते हैं। अगर मैं आप लोगों को आसन लगाकर दिखाऊं और

कला दिखाऊं मुझ में और उन नटों की लड़कियों में तो कोई भी अन्तर नहीं है। ये करामातें नहीं हैं। अब कौन सी करामात रह गई? आप प्रश्न करना चाहते हो तो करो। करामात कौन सी होती है? बताओ। सन्तों की करामाते ये नहीं हैं। ये तो बाजीगर के खेल हैं और दुनिया पागल होकर उनके पीछे–पीछे चल पड़ती है। संतों की करामात तो ये हैं कि नाम लेकर अभ्यास करो। अभ्यास करके शब्द और प्रकाश को देखते चलो। प्रकाश को देखते चलो और शब्द को सुनते चलो। अपनी मंजिलों को तय कर दो। सतगुरु साथ में रहता है। संतों की करामाते ये हैं और भी करामाते हैं। संतों ने जन्म लिया तो काल महाराज ने यह विनती की थी सतपुरुष से कि आप तीन वचन दो तभी मैं देश की रचना कर सकता हूं। सतपुरुष ने पूछा–वे तीन चीजें कौन–कौन सी है? कबीर साहब, तुलसी साहब, दादू और पलटू कहते हैं ये बातें। तीन चीजें यही हैं एक तो संत अपनी करामात न दिखाएं। दूसरे जहां भी जीव हो वह सुखी रहे। चाहे हाथ या सिर कटा हुआ हो। उसी जगह और उसी योनि में सुख माने। तीसरे उसे अपने पिछले जन्म की बातें याद नहीं रहनी चाहिएं। अगर पिछले जन्म की बातें याद आ गई तो कोई भी नहीं बचेगा। सारे के सारे मोक्ष में चले जाएंगे। मेरा देश उजड़ जाएगा। काल महाराज ने ये तीन वरदान ले लिए। तब सतपुरुष ने कहा कि अब मैदान में खेल लो और मैदान में आ जाओ। तब ये बातें होती हैं। इसीलिए मैंने आपको बताया कि इन बातों से बचो। करामात कौन देखता है? करामात तो यही है कि अभ्यास करना सीखो। जब तुम्हारा अभ्यास पूरा हो जाएगा तो जीवन सफल हो जाएगा। पर कब होगा?

प्रेम नगरिया के घाट, अधर एक दरिया बहे।

अधर दरिया कोई आसमान में बहता है? वह दरिया तो तुम्हारे अंतर में है। वह दरिया तीन नाड़ियां ही हैं–ईडा, पिंगला

और सुषुम्ना। यही तीन धाराएं हैं–गंगा, जमना और सरस्वती। इन्हीं तीन धाराओं में से दो को छोड़ कर तीसरी को पकड़ कर चलते हैं तो–

रास्ता शाहरग है दिलबर पे जाने के लिए।

उसे मिलने के लिए सुषुम्ना नाड़ी के द्वारा चलना है। अभ्यास करते रहो अपनी जिन्दगी में। यह मैंने सभी के लिए बताया है। पर मेरे सत्संग को काफी लोग समझ नहीं सकते हैं। मेरा सत्संग इतना ऊंचा है कि जो इसे समझ गया तो उसे दुख पाने की जरूरत नहीं है। इसीलिए मैं कहता हूं कि मुझ से नाम मत लो। मेरा सत्संग सुन कर दिमाग में बैठा लो। मेरा झूठा प्रसाद मत खाओ। मेरी वाणी को प्रसाद समझ कर दिमाग में बैठा लो। मैं कहता हूं कि मुझे नोट चढ़ाने की जरूरत नहीं है। मुझे आप अपने टाइम का दसवां हिस्सा दे दो। ये ढाई घंटे होते हैं और ढाई घंटे ध्यान में बैठना शुरू कर दो। सुमरन करो। अगर तुम्हारा मन नहीं टिकता है तो माला ले लो। उस माला का तो सहारा ही है। आखिर तक उस माला में भी मत टिको। सारी जिन्दगी उस माला में बैठे रहे तो तुम कर्मकांडी बन जाओगे। ये तो माला उसी समय ली जाती है जब मन नहीं टिकता है। फिर मन टिकना शुरू हो जाएगा। जब मन टिकना शुरू हो जाएगा तो सारी ही आदतें छोड़ देगा। वह अपनी मंजिल पर चढ़ जाएगा। तब उसी मन को कहते हैं–

पहले ये मन काग था, करता जीवन घात।
अब ये हंसा भया, चुग-चुग मोती खात।।

फिर यह मोती चुगने शुरू कर देता है और अपने घर चला जाता है। संतों का मार्ग यह है। जैसे कहा है–

प्रेम नगरिया के घाट।

सो यह प्रेम नगरिया तो मैं पहले ही बता गया। कौन सी है वह प्रेम नगरिया?

ये तो घर है प्रेम का, खाला का घर नाहिं।
शीश काट पग तले धरे, तब पहुंचे घर माहिं।।

दादू जी ने भी यही कहा है–

दादू पाति प्रेम की, बांचे बिरला कोय।
वेद शास्त्र पुरान पढ़े, प्रेम बिना क्या होय।।

जब प्रेम नहीं है तो कुछ भी नहीं है। दूसरे महात्मा भी कहते हैं।

जोगी, जंगम, सेवड़ा, सन्यासी और दरवेश।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं, सतगुरु दुर्लभ देश।।

वह जो सतगुरु का देश है दुर्लभ है और बिना प्रेम के वहां कोई पहुंच नहीं सकता है। वह कौन सा देश है? वह राधास्वामी धाम है। वह सतगुरु का देश है। वह अकाल पुरुष का, रमे हुए राम का, वह कुल मालिक का देश है। उसमें बिना प्रेम नहीं पहुंचा जा सकता है। वह सतगुरु का देश दुर्लभ है। प्रेम की महिमा कितनी बड़ी है।

एक भाई मेरे पास आया और रोने लग गया। उसने मेरे पांव पकड़ लिये। वह रोने लगा तो मैंने कहा–क्या बात है? उसने कहा–मेरे ऊपर दया कर दो। मैंने कहा–क्या दया करूं? उसने कहा–मुझे आप दुख दे दो। आप मुझे सुख ना देना। दुख दे देना। मैंने कहा–जब तेरी यही बात है और तेरा दुख से इतना ही प्यार है तो जाओ मैंने तुझे सुख भी दे दिया और शांति भी दे दी। जो तू काम करेगा वह काम भी बन जाएगा। पर मेरी एक बात याद रखना। बस ब्रह्मचर्य का पालन करना। औलाद तेरे पास काफी है। मैं अपनी बातें बताता हूं। यही बात मीरा ने भी कही है और भी महात्माओं ने कही है। यही बताते हैं कि जब सारी चीजें मिल गई तो क ष्ण जी ने माता कुन्ती को कहा–भूआ ! तू मांग क्या मांगती है। उसने कहा–क ष्ण ! क्या मांगू? क ष्ण जी ने कहा–कुछ भी

मांग ले। कुंती ने कहा–बेटा ! मुझे तो दुख दे देना। कष्ण ने कहा–अरी ! तूने तो सारी उम्र ही दुख में काटी है अब भी दुख ही मांग लिया। कुंती ने कहा–हां, जब मेरे अंदर दुख रहा तभी मैं तुम्हें याद करती रही तभी तुम्हें अपने आगे खड़ा पाया। हमारे अंदर अनेक दुख पड़े। तुम्हें हम याद करते रहे। अगर दुख नहीं होता तो, मैं याद नहीं करती। इसीलिए मैं तुझे याद करती रहूंगी। तू दुख देते रहना। इसीलिए महात्मा कहते हैं–

सुख के माथे सिल पड़ो, नाम हिये से जाय।
बलिहारी उस दुख की, जो पल-पल नाम रटाय।।

ऐ सत्संगियो ! निंदा करने वाले को दुश्मन मत समझो। वह तुम्हें नाम याद दिला देता है। तुम घमण्ड में नाम को भूल जाते हो। बुराई करने वाले तुम्हारी बुराई करके जगाते हैं। चेतन करते हैं। कबीर साहब ने भी कहा है–

निंदक मेरा मत मरो, जीवो आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।।
निंदक नेड़े राखिए, आंगन कुटी छपाय।
बिन पानी बिन साबुन, निर्मल करे सुभाय।।

कितनी बड़ी बातें कही हैं?

निदंक नेड़े राखिए, आंगन कुटी छपाय।
बिन पानी बिन साबुन, निर्मल करे सुभाय।।

वह निर्मल कर देता है। वह बड़ी दया करता है। वह ताने मार–मार कर पक्का कर देता है। निंदक तो बिष्ठा खाने वाला सूअर ही होता है। यदि सूअर नहीं हो तो गंदगी हो जाएगी। चारों तरफ फैल जाएगी। सड़कर मर जाओगे। सो संत महात्मा का निंदक होता है वह सूअर का काम करता है क्योंकि उसकी बुराइयों को या यूं कहो उसके बिष्ठे को सूअर खा लेता है। इसी प्रकार वह भी निंदा करके उसके अवगुणों को चर जाता है। आप

के ऊपर कितनी दया करता है निंदक। वह आप तो नर्क में जाता है और अपने प्रेमी को उबार लेता है। संतों को उबार लेता है। वह किस लिए नर्क में जाता है? वह अपने प्रेमी के लिए ही जाता है। वह करता तो विरोध है। पर वह आप नर्क में जाता है। वह कितना उपकार करता है। इसलिए–

निंदक नेड़े राखिए, निंदक न जा दूर।
जैसे बिष्ठा गांव का, साफ करते हैं सूर।।

यह कबीर साहब ने बताया है। सो कहा है–

हां भई हंसा, चाल बसो उस देश,
जहां का वासी फेर ना मरे।

आगे क्या कहते हैं–

प्रेम नगरिया के घाट अधर एक दरिया बहे।
वहां नहाए से सुख हो तपत तेरे तन की मिटे।।

वह दरिया कौन सा है? जिद्द करने वाले तो ऐसे होते हैं कि तेरे अंदर दरिया तो बहता ही है। यहां पानी नहीं है। तू अपने उस दयिार में ही पानी पी लेना। अरे भले आदमियों ! जब उस दरिया में पहुंच जाते हो तो फिर पानी की भी थोक पूरी जाती है। उस दरिया में ही नहीं पहुंचते तो दरिया की थोक पूरी नहीं होती है। क्या आपने बड़े–बड़े महात्माओं को नहीं देखा है? वे जेल में डाल दिए। उनको क्या हुआ? वे प्रेम नगरिया के घाट पर पहुंच गए और उनको वहीं पानी पहुंच गया। रोटी भी पहुंच गई। कहां से पहुंची? लोग कहते हैं कि परमात्मा ने पहुंचा दी। परमात्मा पानी देता है। इसी तरह से जब परमात्मा प्रगट कर लोगे अंतर में तो वह तुम्हारा सारा ही काम कर देगा। मैं तो यहां समाप्त करता हूं। प्रेम नगरिया के घाट अधर एक दरिया बहे।

वहां नहाए से सुख हो तपत तेरे तन की मिटे।

अर्थात सारे तन की तपत मिट जाती है। सबसे बड़ा दयाल

कौन होता है? वही सबसे बड़ा दयाल है जो इस तपत को खत्म कर दे। इस दरिया में वह गोता लगवा दे। वही सब से बड़ा दयाल होता है और वह अपने घर ले जाता है। संतों का मार्ग करणी का है, प्रेम का है। इस मार्ग पर चलने वाले को दुख तकलीफ बहुत होते हैं। वह अपने घर चला जाता है। प्रेमियो, सत्संगियो ! वहां नहाए से सुख होता है और तपन तन की मिट जाती है। फिर कहा है–

तेरा जन्म मरण मिट जा चौरासी का फंद कटे।
गुण गावे भानी नाथ, भजन में सदा लगा ही रहे।।

आखरी टाइम पर यही कह दिया कि भजन में सदा लगा ही रहे। वह भजन किसका करता है? सुमरन भी करता है और ध्यान भी करता है। ये दोनों तो भजन नहीं हैं। जब सुमरन करते हो तो ध्यान और भजन दोनों ही गायब रहते हैं। जब सुमरन से ध्यान में चले जाते हो तो सुमरन गायब रहता है। असली सुमरन आ जाता है। फिर ध्यान को भी छोड़ कर शब्द में समा जाते हो तो सुमरन और ध्यान दोनों ही गायब हो जाते हैं और सूक्ष्म रूप में उस शब्द के साथ चले जाते हो और वही जाकर शब्द में समा जाते हो। इसको महात्माओं ने शब्द में समाना कहा है। शब्द की महिमा बताई है। उन्होंने किसी ने किसी तरह कहा है। कोई विवेक मार्ग को ढूंढता है। कोई ज्ञान मार्ग से और कोई अन्य मार्ग से ढूंढता है। कोई तप और कोई जप से ढूंढता है। हर बंदा उसे तलाश करने के लिए चलता है। पर चलता है तो वह किस तरह चलता है? उसके लिए सभी को प्रेम की ही जरूरत पड़ती है। जिसमें प्रेम नहीं है वह चाहे तप कर लो, चाहे जप कर लो, चाहे पूजा–पाठ, हवन–यज्ञ कर लो। वहां प्रेम के बगैर कुछ नहीं हो सकता है। प्रेम का सहारा लेना पड़ेगा और प्रेम से ही उस घर पहुंचोगे। जैसे इस घर में आप आए बैठे हो। कितनी संगत है यह प्रेम से ही आई है।

इसी का नाम सब कुछ है। प्रेम से आए तो सारा जीवन बन गया और यह सत्संग आपको दे दिया।

अब। मैंने आपको जो बातें बताई वे करते रहो। एक टाइम नामदान का भी हुआ। नामदान किसे कहते हैं–

काना बाती कुर और तू चेला में गुर।
सवा रुपया धर, और चाहे डूब चाहे तिर।।

ऐसा तो कितने ही कर सकते हैं। पर यहां तो दो, तीन घंटे में जो रग–रग समझाया जाता है, सारा हिसाब किताब वह नामदान होता है। उसे कर्म लेने पड़ते हैं। सो मैंने बहुतों को नामदान भी दिया। संगत बड़ी भारी जोर शोर में चली हुई है। यह तुम्हारा भाग है। संगत आती है प्यार प्रेम सीखो। पर मैं उन सत्संगियों को कहता हूं जो महीने में एक बार आ जाते हैं और सेवा करते हैं दो ही दिन उनको मिलते हैं। वे ऐसा न सोचें कि उनका टाइम बर्बाद जाता है। उनका टाइम बर्बाद नहीं जाता है। मालिक उनकी हाजरी लगाता है। उनका काम उससे भी दुगना चलता है। मैं भी आशीर्वाद यही देता हूं कि जो दरबार की सेवा करता है वही उस कुल मालिक राधास्वामी दयाल की सेवा है। इसी सेवा से उनका उद्धार होता रहेगा।

सेवा सिद्ध सफलता, सेवा विजय अपार।
सेवा में मेवा मिले, सेवा में करतार।।

सब कुछ सेवा में मिलता है। जो सच्चाई से सेवा करते हैं, मालिक उनको शांति दे और मैं भी यही कहता हूं। अगर मेरे ऊपर विश्वास और श्रद्धा है और सत्संग की सेवा करना चाहते हो तो मालिक उनको शांति देगा। मेरे पास जो सेवा देने वाले आते हैं, तो सेवा पात्र रखे हैं उनमें डाल जाओ। मुझे क्या दिखाना है? तुम जानते हो और तुम्हारा परमात्मा जानता है तीसरे को क्या बताना है? मैं वे बातें बताता हूं कि तुम्हें तकलीफ न हो। मेरे पास आओगे

और मुझे दिखाओगे कि मैंने इतना दिया। मेरे को क्या दिखाते हो? या तो तुम सोचते हो कि महाराज तो पशु जैसा है, दिखा देंगे। यह सोचते हो तो तुम तिर नहीं सकते हो और यह सोचते हो कि महाराज जी तो जानी जान हैं कहीं भी रखो वे जानते हैं तो कहीं सेवा डाल दो। वह तो सभी स्थानों पर देखता है। पर मैं यहीं देखता हूं तो राधास्वामी दयाल तो हर जगह ही देखता है। सो जहां भी सेवापात्र मिले वहीं डाल दो। जरूरी भी नहीं है। तुम जानो तुम्हारा मालिक जाने। तीसरे को जनाओगे तो पकड़े जाओगे। तीसरे को तो कुछ भी मत जनाओ। अपनी गुप्त बात है वह भजन सुमरन करो। तीसरे को वह भी मत बताओ। इसीलिए महात्मा कहते हैं–इस हाथ से कुछ करते हो तो दूसरे हाथ को भी पता मत लगने दो। मेरे बाद में सत्संग इतना चलेगा कि दर्शन वहां नहीं होंगे। दर्शन और ऊंचे स्टेज पर ही होंगे और बड़ी भारी ताकत काम करने वाली आएगी। इतना काम करेगी कि जिनको नाम मिल जाएगा वे नर्क में नहीं जाएंगे। लख चौरासी नहीं भोगेंगे। यह मैं सुबह के टाइम पर बताता हूं क्योंकि मुझे उन महात्माओं ने कही थी। इसीलिए बताता हूं। फकीरचन्द ने कही थी। उन्होंने छाती में हाथ मारे थे कि मैं गौड़ ब्राह्मण हूं। राधास्वामी धाम से आया हूं। मेरे आगे–आगे राम और क ष्ण इस–इस तरह से चला करते थे। मैंने सोचा कि इनसे तो मुक्ति नहीं होगी। आगे और चलो। सच्ची बातें कहता हूं कि वक्त ऐसा आएगा कि बेटा! तेरा अपनाया हुआ जीव नर्क में नहीं जाएगा। अभ्यास करना, यही द्वारकादास ने और मेरे गुरु ने कहा था। द्वारकादास ने जो कहा था वह तो बहुत कठोर था। मैं कैसे कहूं। मेरा मुंह छोटा है और वे बातें बड़ी कह गए हैं। पर वे कहते हैं कि ये मैंने नहीं कही हैं। ये तो ऊपर से आवाज आती है और कबीर साहब बोलते हैं। वे बताते हैं तब मैं बोलता हूं। निंदा करने वाले निंदा करते रहो। वे तो निखार लाते

हैं। बुराई करने वाले करते रहें वे भी निखार लाते हैं। आप लोग बुराइयों के कीड़े न बनो। अपनी तरफ बुराई मत आने दो। जितने भी सत्संगी और सत्संगिन आए हैं उन्हें तो यही सोचना चाहिए कि महाराज जी हमारा भाई है। बहन अपने भाई की बेइज्जती नहीं करना चाहती। नालायक हो वही बेइज्जती करना चाहती है। गिरा हुआ ही अपने भाई की बेइज्जती करना चाहता है। मैं तो तुम्हारा भाई हूं। छोटा नहीं तो बड़ा भाई समझो।

ध्यान में बैठो तो मेरी एक ही विनती है, मेरी तो यहीं मांग है कि मुझे कुछ मत दो। मुझे एक ही चीज दो। ध्यान में से उठो तब यही कहो कि हे राधास्वामी दयाल ! हमारे महाराज की इज्जत बनी रहे। कभी गिरावट न आए। आप सब तो मेरे गुरु हो। आप लोगों के प्रताप से ही तो मैं जीवित हूं। आपकी दया से ही मैं काम कर रहा हूं। आपकी दया नहीं होती तो मैं गिर जाता। क्योंकि मेरे गुरु ने नेम करवा दिया और मैं आपकी सेवा में आ गया। यदि कोई न कोई गड़बड़ हो गई तो मैं सोचता हूं कि मेरी संगत क्या कहेगी? पर अब तुम घबराए होंगे। द्वेष वालों ने तो द्वेष की बातें की और विरोध किया। अब तो डी. सी. साहब ने इश्तिहार निकलवा दिए। बता दिया कि वे दुष्ट लोग हैं। उन पापियों का क्या किया जाए जो संतों पर भी लांछन लगा देते हैं? पर तुम्हारे ऊपर तो लांछन लगाया है, हाथ तो नहीं काटे। तुम्हारे गुरु का सिर तो नहीं काटा। तेग बहादुर का सिर ले लिया। कितने बताऊं, अर्जुन साहब को दरिया में गोता मारना पड़ा। यह तो सोचो ! यह बुरी बात तो नहीं है। अपने विचार पवित्र रखा करो। सेवा करना सीखो, तुम्हारा सब कुछ भला ही भला होगा।

।। राधास्वामी ।।

सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सभी सत्संगियों तथा विशेष रूप से सभी सेवादारों को **"राधास्वामी संत संदेश"** पत्रिका के माध्यम से सूचित किया जाता है कि हजूर महाराज जी की दया मेहर से भिवानी शाखा का अगला वार्षिक सत्संग **दिनांक 05 – 03 – 2006** को होना निश्चित किया गया है। अत: सभी सेवा करने के इच्छुक सत्संगी व सेवादार दिनांक **04 – 03 – 2006** को प्रात: 10 बजे भिवानी आश्रम में निश्चित समय पर अवश्य पहुंच जायें।

अत: तदनुसार हमारे सभी **"राधास्वामी संत संदेश"** के सदस्यों से भी प्रार्थना की जाती है कि यह सूचना अपने अधिकतम सत्संगियों व विशेष रूप से सेवादारों तक जिस प्रकार भी संभव हो विशेष रुचि लेकर शीघ्रातिशीघ्र पहुंचाने का कष्ट करें क्योंकि सत्संग बहुत ही निकट है। इसे अति आवश्यक समझें।

।। राधास्वामी।।

सफाई के सेवादारों के लिए विशेष सूचना

सफाई के सभी सेवादारों से अनुरोध है कि वे 03 – 03 – 2006 को प्रात: भिवानी आश्रम में जरूर पहुंच जाए।

आगामी मास के सत्संग कार्यक्रम

05 मार्च रविवार (वार्षिक) भिवानी

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अत: आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

फरवरी/मार्च 2006 मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1	फतेहाबाद	20 फरवरी	-	26 फरवरी
2	रोहतक	27 फरवरी	-	05 मार्च
3	जीन्द	06 मार्च	-	12 मार्च
4	जुलाना	13 मार्च	-	19 मार्च
5	पानीपत	20 मार्च	-	26 मार्च

जीवन दर्शन

दिल पांच किस्म के होते हैं – मुर्दा, बीमार, गाफिल, वह जिस पर पर्दा पड़ा हो और होशियार। मुर्दा दिल काफिरों और नास्तिकों का, बीमार गुनहगारों का, गाफिल बहुत खाने वालों का, पर्दा पड़ा हुआ दिल विरोधियों का और होशियार दिल भजन – बन्दगी करने वालों का होता है।

मौलाना रूम